प्रशंसनीय पत्रिका

विज्ञान प्रगति का मई 2014 का 'भारतीय विज्ञान कॉंग्रेस पर विशेषांक' पढ़कर अति प्रसन्नता हुई। आपने इस अंक को 'प्रीवेन्शन इज़ बैटर देन क्योर' का रूप प्रदान कर प्रशंसनीय कार्य किया है। मैं प्रारम्भ में जीव विज्ञान का विद्यार्थी रहा। मेरी डॉक्टर बनने की इच्छा थी लेकिन धनाभाव के कारण यह पूरी न हो सकी। इस क्षतिपूर्ति के लिए मैं बचपन से अब तक 'विज्ञान प्रगति' और 'साइंस रिपोर्टर' पढ़ता रहता हूँ। आयुर्वेद की तरफ भी झुकाव हुआ और अध्ययन भी किया, डॉक्टर ऑफ नेचुरोपैथी का भी अध्ययन किया परन्तु मन को संतुष्टि 'विज्ञान प्रगति' से ही मिली। नवीनतम जानकारियों से युक्त यह अंक प्रशंसनीय लगा। पढ़ना आरम्भ कर एक बार में पूरा पढ़ डाला। बहुत ही रुचिकर अंक के लिए आपको बधाई। आप इसी तरह उपयोगी अंक देते रहें, इसी शुभकामना के साथ।

श्री गोविन्द प्रसाद शुक्ल, बंगला सं. 691, सेक्टर-14, इन्दिरा नगर, लखनऊ-226 016 (उ.प्र.) [मो. : 09771443276
ई-मेल : gprasadshukla@gmail.com]

मनोबलवर्द्धक पत्रिका

'भारतीय विज्ञान कांग्रेस पर विशेष' विज्ञान प्रगति के मई 2014 के अंक की आमुख कथा 'भारतीय विज्ञान कांग्रेस : 2014 समावेशी विकास के लिए विज्ञान में नवाचार पर बल' सचमुच अद्वितीय रही। महाविभूति स्तंभ के अंतर्गत 'व्याधियों के शत्रु और मानवता के मित्र डा. येल्लप्रगड सुब्बाराव' के जीवन परिचय को पढ़कर सचमुच इस बात की प्रेरणा मिली कि शुरुआती असफलताओं से घबराना नहीं चाहिए। डा. सुब्बाराव के जीवन का अध्ययन काल बेहद चुनौतीपूर्ण रहा परन्तु सफलता के शिखर पर पहुँचकर वे मानवता के लिए अद्वितीय योगदान करने वाले धरती के भगवान साबित हुए। मई 2014 के अंक के साथ-साथ अप्रैल 2014 की आमुख कथा 'मायाजाल मोटापे का' अति ज्ञानवर्द्धक लगी। आजकल देखने में आ रहा है कि लोग स्वास्थ्यवर्द्धक पौष्टिक आहार की जगह स्वादवर्द्धक और हानिकारक आहार ले रहे हैं। इससे मोटापे के साथ-साथ विभिन्न प्रकार के रोग भी पनप रहे हैं। आज के शिक्षित समाज को सोचना होगा कि हम अपनी सेहत के प्रति कब सचेत होंगे, यदि सब कुछ गंवा कर हुए तो क्या हुए? सुधरने की शुरुआत कर दें....क्योंकि कहा गया है कि जब जागे तभी सवेरा। विज्ञान प्रगति की टीम को आम जन जीवन से जुड़े इस अति महत्वपूर्ण विषय की बेहतरीन प्रस्तुति के लिए धन्यवाद। मेरी एक प्रेरणात्मक कविता इस प्रकार है :

बचपन में बड़ी चुनौती होती है,
नहीं बपौती अकेली किसी की होती है।
मिल-जुल कर परिवार बनाना अच्छा है,
बच्चे को क्या वह तो बस बच्चा है।
छोटी-मोटी गलती सबसे होती है,
बीज सफलता के गहरे में यह बोती है।
मिलता यदि उर्वर वातावरण,
तो होता विकास है पूरा।
निराशा, दण्ड, भय हावी हो जाये यदि,
होता जीवन का ही अन्त।
सपना होता कोई न पूरा इस पर समाज विचार करे,
बड़ों को चाहिए कि वे अपने में भी सुधार करें।
छोटी-मोटी असफलताओं पर, न कुदृष्टि का प्रहार करें,
इसमें पूरे समाज की बड़ी भलाई है।
इनकी त्यागमयी जीवन शैली से,
हमने यह अद्भुत शिक्षा पायी है।

डा. वी. के. वर्मा, जिलाध्यक्ष, रिसर्च सोसायटी ऑफ होमियोपैथी (इण्डिया), पटेल एस.एम. होमियो हॉस्पिटल, गोटवा बस्ती, जिला-बस्ती-272007 (उ.प्र.) [मो. : 09559669921; 09415163328]

उत्कृष्ट पत्रिका

विज्ञान प्रगति के बारे में लिखने से पहले सोचता हूं कि अपने बारे में एक छोटा-सा परिचय दे दूं। मैं लगभग सन् 1976 से अपनी लेखन व कार्टून-कॉमिक यात्रा में लगातार सक्रिय रहा हूँ। मुझे 2007 में भारत सरकार से राष्ट्रीय विज्ञान संचारक पुरस्कार भी मिला है। मैं विज्ञान प्रगति से 1978 के आस-पास जुड़ा और मेरी इस पत्रिका से संबद्धता एक ही साथ, एक पाठक व एक कार्टूनिस्ट के तौर पर समानांतर रूप से रही है। अब तो मैं अपने आप को विज्ञान प्रगति के साथ गहरी आत्मीयता के भाव से जुड़ा हुआ महसूस करता हूँ। वैसे तो मैं संभवतः 35-40 वर्षों से विज्ञान प्रगति से जुड़ा हूँ, परन्तु पत्र के रूप में मैं पहली बार विज्ञान प्रगति के बारे में लिख रहा हूँ। सोचता हूँ, कहाँ से शुरू करुँ! क्या अच्छा नहीं है विज्ञान प्रगति में, सब कुछ तो सर्वश्रेष्ठ ही है। चाहे पत्रिका के ले-आउट की बात हो, या पेपर व प्रिंटिंग की! सभी प्रकार से विज्ञान प्रगति उत्कृष्टता के शिखर पर है। कभी-कभी तो मैं विभोर और आत्ममुग्ध हो उठता हूँ कि 'विज्ञान की शान ये वैज्ञानिक महान' स्तंभ के जरिए मैं भी विज्ञान प्रगति से जुड़ा हूँ। मैं इसके लिए संपादक जी का दिल से आभार व्यक्त करता हूँ। मैंने विज्ञान प्रगति का ब्लैक एंड व्हाइट से लेकर दो कलर और आज की मल्टी कलर प्रिंटिंग का जमाना देखा है। संपादक महोदय ने विज्ञान प्रगति की गुणवत्ता में इतनी विशिष्टता भर दी है कि आलोचकों को सोचना पड़ेगा। एक विद्वान लेखक के रूप में प्रसिद्ध व पुरस्कृत संपादक की संपादकीय तो एकदम से पत्रिका की सूत्रधार प्रतीत होती है। कई पीढ़ियों के मार्गदर्शन व ज्ञानार्जन करती आ रही विज्ञान प्रगति कालांतर में भी पाठकों को लाभान्वित करती रहेगी, ऐसी आशा है व मेरी शुभकामनाएं हैं।

श्री शैल नीरद (कार्टूनिस्ट) साकेत विहार, अनीसाबाद, पटना-800 002 (बिहार)
[फोन. : 0612 2250656; मो. : 09234877975
ई-मेल : neeradcartoonist@rediffmail.com; neeradcartoonist@yahoo.com]

ज्ञानवर्द्धक पत्रिका

मैं विज्ञान प्रगति का विगत 30 वर्षों से नियमित पाठक हूँ। मेरे विद्यार्थी जीवन से लेकर वर्तमान में विज्ञान अध्यापक के रूप में कार्य करते समय तक मेरे ज्ञानवर्द्धन में विज्ञान प्रगति ने हमेशा अतुल्यनीय योगदान दिया है। पिछले 20 वर्षों में मैंने विज्ञान प्रगति के विभिन्न स्तंभों की सहायता से राष्ट्रीय पहचान प्राप्त की है एवं अनेक राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त किये हैं। हमेशा की तरह विज्ञान प्रगति के अप्रैल एवं मई 2014 के अंक विश्वव्यापी समसामयिक वैज्ञानिक शोध समीक्षा से भरे हुए लगे। ज्ञानेन्द्र मिश्र जी के मोटापे एवं नमक पर लिखे लेख अत्यंत उपयोगी लगे जिनके माध्यम से पाठकों को स्वास्थ्य संबंधी नवीनतम जानकारियाँ प्राप्त हुईं। कूटू के गुण एक नयी दिशा दिखाते लगे तो चूहेदानी का अहिंसक स्वरूप मन को लुभा गया। 'अग्निहोत्र' हमारी प्राचीन भारतीय मान्यताओं को वैज्ञानिक आधार प्रदान करता है। मई अंक में डा. सुब्बाराव की जीवनी प्रेरणाप्रद लगी जो मन को छू गई। मुझे प्रेमचन्द्र श्रीवास्तव की भाषा शैली बहुत अच्छी लगी। 'पोषण संबंधी रोगों' एवं 'चूहे बिल्ली की कहानी' भी ज्ञानवर्द्धक लगी। 'आर्सेनिक' पर तथ्यात्मक प्रस्तुति हेतु साधुवाद। दोनों अंकों में ऐसे अनेक तथ्य सामने आये हैं जो पर्यावरण संरक्षण एवं जीवदया को प्रोत्साहित करने वाले हैं जिनका साभार सदुपयोग मैं अपनी रचनाओं में कर सकूंगा। धर्म-विज्ञान के अन्तर्संबंधों पर कार्य करते हुये विद्यार्थियों के बीच प्रकृति संरक्षण एवं जीवदया की भावना का विकास करना मेरा मुख्य मिशन है जिसमें विज्ञान प्रगति ने कदम-कदम पर मेरा साथ दिया है।

श्री अजित जैन, 'जलज', अध्यापक, मधु ज्वैलरी, राजमहल रोड, टीकमगढ़ (म.प्र.) [मो. : 09926565711]

मेरी प्यारी मार्गदर्शक पत्रिका

मैं विज्ञान प्रगति का वर्ष 2009 से नियमित पाठक हूँ। बात उन दिनों की है जब मैं मैकेनिकल इंजीनियरिंग की पढ़ाई कर रहा था। उस समय मेरा एक पत्र विज्ञान प्रगति में प्रकाशित होने पर मेरे दोस्तों ने मुझे बधाईयां दी थीं। मैंने अपने उन दोस्तों को विज्ञान प्रगति के ज्ञानवर्द्धक गुणों के बारे में बताया। उनमें से मेरे अनेक साथी इसके पाठक बन गए। अब अलवर स्थित छात्रावास के वे छात्र विज्ञान प्रगति के आने का हर माह इंतजार करते रहते हैं। महीने के शुरू में सभी बच्चों के हाथों में जब यह पत्रिका देखता हूँ तो मुझे बहुत खुशी होती है कि मेरे एक अकेले पाठक बनने से आज 50 छात्र इस पत्रिका का आनन्द ले रहे हैं व अपना ज्ञानार्जन कर रहे हैं। मैं सभी वर्ग के लोगों से अनुग्रह करता हूँ कि वे सब विज्ञान प्रगति के पाठक बनें क्योंकि

सीएसआईआर-निस्केयर द्वारा प्रकाशित यह पत्रिका विज्ञान के क्षेत्र में अति उत्तम श्रेणी की है और सभी के लिए लाभदायक है। मैं आज एक सफल इंजीनियर हूँ और यह सब विज्ञान प्रगति की ही देन है। मैं विज्ञान प्रगति के संपादक एवं उनकी टीम का तहेदिल से शुक्रिया अदा करता हूँ जो भारत की युवा पीढ़ी को एक सही दिशा दे रहे हैं।

जयहिन्द, जय भारत, जय विज्ञान प्रगति।

श्री मुनेश पोसवाल, सुपुत्र श्री विजय सिंह पोसवाल, गांव-गुलमानी, पो.-अलघानी, तहसील - नगर, जि.- भरतपुर 321024 (राज.) [मो. : 09887114414]

अनमोल खजाना

विज्ञान प्रगति अपने आप में एक अनमोल खजाना है। यह एक ऐसी ज्ञानवर्द्धक मासिक पत्रिका है जिसकी ललक मुझे हर महीने रहती है। मेरा अपना सुझाव है कि आप विज्ञान प्रगति में एक स्थान साइंस से जुड़े कैरियर को देने की कृपा करें जिससे हमें यह पता चल सके कि हम साइंस में क्या-क्या कर सकते हैं। मैं अपने पत्र के माध्यम से आपका हार्दिक धन्यवाद करता हूँ। विज्ञान प्रगति की समस्त टीम के लिए मेरी शुभकामनाएं।

श्री कुणाल मिश्रा, श्री प्रदीप मिश्रा, L-321, मंगोलपुरी, नई दिल्ली-110083 [मो. : 09540619642]

एक्सीलेंट मैंगज़ीन ऑफ साइंस

मैं हाईस्कूल का छात्र हूँ और विज्ञान प्रगति का नया पाठक हूँ। मुझे सर्वप्रथम फरवरी 2014 का अंक प्राप्त हुआ, उससे मुझे इस पत्रिका की विशेषताओं के बारे में पता चला। इस पत्रिका से मुझे साइंस की कई महत्वपूर्ण और रहस्यमयी जानकारियों के बारे में पता चला। इससे प्रभावित होकर मैंने इसके पिछले अंकों का भी अध्ययन किया, जिनमें से मुझे जुलाई व नवम्बर 2013 के अंक काफी आकर्षक लगे। नवम्बर के अंक 'परिंदों के मसीहा-सालिम अली' से विश्व के बहुत से अनोखे तथा सुंदर पक्षियों के बारे में पढ़कर बहुत आनन्द आया। सितम्बर 2013 के अंक का 'चिन्तन-मनन' कॉलम काफी रोचक लगा। वास्तव में बुद्धिकर्मियों को अपने मस्तिष्क को तनावमुक्त रखने के लिए कुछ समय अवश्य निकालना चाहिए। विद्यार्थियों को अपनी दिनचर्या में खेल को अवश्य शामिल करना चाहिए। इससे मस्तिष्क पुनः कार्य करने के लिए व्यवस्थित हो जाता है। अतः यह पत्रिका विज्ञान की कई रोचक जानकारियों से भरपूर है। भारत के सभी युवाओं को इस पत्रिका का नियमित अध्ययन करना चाहिए।

श्री सुजीत कुमार सिंह, सुपुत्र श्री रामकिशोर सिंह, गांव- छोटी सोनाई, पो.- सोनाई, तह.-करछना, जि.- इलाहाबाद (उ.प्र.)

अतुलनीय पत्रिका

मैं विज्ञान प्रगति का नियमित पाठक हूँ और जबसे मैंने इस पत्रिका को पढ़ना आरम्भ किया है तब से दिन-प्रतिदिन मेरा ज्ञान बढ़ता ही जा रहा है। इसलिए मैं कह सकता हूं कि यह एक अतुलनीय पत्रिका है। विज्ञान प्रगति के कारण ही मेरी सिविल परीक्षा की तैयारी अच्छी हो रही है। अप्रैल 2014 का एक विशेष लेख 'अग्निहोत्र का आध्यात्मिक एवं वैज्ञानिक महत्व' मुझे बहुत ही रोचक व ज्ञानवर्द्धक लगा। इसके लिए डा. डी. के. माहेश्वरी जी को बहुत-बहुत धन्यवाद। कुल मिलाकर विज्ञान प्रगति के सभी लेख ज्ञानवर्द्धक होते हैं। विज्ञान प्रगति की समस्त टीम को मेरी तरफ से शुभकामनाएं और धन्यवाद। मैं विज्ञान एवं अन्य वर्ग के सभी छात्र-छात्राओं व अभिभावकों से अनुरोध करता हूँ कि वे अवश्य विज्ञान प्रगति के नियमित पाठक बनें, क्योंकि यह एक ज्ञानवर्द्धक एवं मार्गदर्शक पत्रिका है।

श्री लवकेश शर्मा, सुपुत्र श्री सुभाष शर्मा, गांव व डा. - चक महाराज का, जि.- श्री गंगानगर-335 001 (राज.)
[मो. : 07742218787 ई-मेल : Love.koki23@gmail.com]

प्रकाशमयी पत्रिका

विज्ञान प्रगति एक प्रकाश फैलाने वाली पत्रिका है और इसके लेख मर्म को छू लेने वाले होते हैं। अप्रैल 2014 की आमुख कथा 'मायाजाल मोटापे का'! अति उपयोगी लगी। सवाल जब-जब जवाब तब-तब तो विज्ञान प्रगति की आत्मा होते हैं। दीपक कोहली जी का विज्ञान समाचार स्तंभ भी विज्ञान प्रगति की जान रहा। कुल मिलाकर अप्रैल 2014 का अंक अत्यंत ज्ञानोपयोगी रहा। हालांकि विज्ञान प्रगति सभी वर्ग के छात्रों के लिए उपयोगी सिद्ध हो रही है, चूंकि मैं बायो की छात्रा रही हूँ इसलिए मुझे यह पत्रिका बहुत पसंद है। मुझे आशा है कि विज्ञान प्रगति में आगे भी पेड़-पौधों पर लगातार अच्छे लेख प्रकाशित होते रहेंगे।

सुश्री प्रस्तुति मिश्रा, एम.एससी., बायोटेक्नोलॉजी, हेमवती नंदन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर, गढ़वाल-246174 (उत्तराखण्ड) [मो.: 09452050498;

शिक्षाप्रद पत्रिका

विज्ञान प्रगति का अप्रैल 2014 का अंक बेहद प्रभावी/आकर्षक/शिक्षाप्रद/सर्वोत्तम/ खूबसूरत लगा। ज्ञानेन्द्र मिश्रा जी का विशेष लेख 'कम खायें नमक' बहुत ही मर्मस्पर्शी रहा। पूर्वान्चल में देहात की महिलाओं को मैंने स्वयं खड़ा नमक जो आयोडीन युक्त नहीं होता है खाते हुए देखा है। यदि वहां के लोगों का परीक्षण किया जाए तो सबके सब हाई ब्लड प्रेशर से पीड़ित मिलेंगे। मैंने इस विशेष लेख की फोटो-स्टेट कराकर अनेक घरों में बांटी और कहा कि पढ़े-लिखे लोगों से इसे पढ़वाओ और तदनुसार कार्य करो। 'कूट-कूट भरे गुण हैं गुण कूटू में' तथा 'अग्निहोत्र का आध्यात्मिक एवं वैज्ञानिक महत्व' बेहद रुचिपूर्ण लेख लगे। इस अंक के विज्ञान समाचार तथा आमुख कथा 'मायाजाल मोटापे का' बहुत ज्ञानवर्द्धक लेख लगे।

नियत और नीति का आकाश,
प्रदूषण/प्लास्टिक का जो करे पर्दाफाश।
हरित क्रांति/खूबसूरत प्रस्तुति/प्रकृति की हसीन कृति
को जो करे पर्णावति वही है पत्रिका विज्ञान प्रगति।

श्री यू. एस. मिश्रा, ग्राम - प्यारेपुर मिश्र, पो.- मर्यादपुर, जिला-मऊ-275101 (उ.प्र.)

कार्बन-कार्बन

मैं काला हूँ तो क्या हुआ?
सर्वचेतन की सृष्टि हूँ मैं
जीव-जन्तु का पोषक हूँ मैं
त्रिनेत्र की विनाशकारी शक्ति हूँ मैं
कार्बन गाता रहा ....., हम सुनते रहे।

सतयुग से.....कलियुग तक
हर नर का दिल में डर सिर्फ ईश्वर से
मगर...., इस तेज राकेट युग में
हर दिमाग में डर सिर्फ बढ़ती कार्बन से
कार्बन बना गब्बर....., हम हुए रबर।

युग युग से चलते रहे
जल-वायु के फुटबाल खेल में
गोल...., कभी जल का कभी वायु का
इस खेल में कभी ठंडक कभी गर्मी
कार्बन नाचता रहा....., हम देखते रहे।

मानव के अंत बिना अनंत लोभ
आविष्कारों की रफ्तार से उड़ती धूल
अमीर देशों की बड़ी-बड़ी भूल
मिलकर बिगड़ा कार्बन का समतोल
कार्बन लाल हुआ...., हम पीले हुए।

समन्दर में सीक्वेस्टर हुए
रूपये ज्यादा....., मगर कार्बन कम
कार्बन क्रेडिट से मार्केट पकड़ा
गर्मी ज्यादा, पर हवा में ठंडक कम
कार्बन हंसता रहा ....., हम रोते रहे।

पिछली कुछ सदियों से जल रहा हूँ मैं
भू-जल-वायुमंडल में
कूल मी डाउन..., कूल मी डाउन
आपके लिए, आपकी संतति के लिए
आखिर ... चेतना की सृष्टि हूँ मैं
कार्बन चीखता रहा....., हम सोते ही रहे।

संपर्क सूत्र :
डा. विरूपाक्ष वणकार, चीफ सांइटिस्ट, सी.एस.आई.आर. - राष्ट्रीय समुद्र विज्ञान संस्थान, दोना पावला, गोवा